(ग) अथ विसर्गसन्धिः

विसर्जनीयस्य सः 8.3.34

खरि। विष्णुस्त्राता।

व्याख्याः खर् परे होने पर विसर्ग के स्थान पर स् आदेश हो जाता है। जैसे विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता।

वा शरि 8.3.36

शरि विसर्गस्य विसर्गो वा। हरिः शेते, हरिश्शेते।

व्याख्याः विसर्ग से परे यदि शर् हो तो विसर्ग का विकल्प से विसर्ग ही रहता है। यह पूर्व सूत्र का अपवाद है। पूर्व सूत्र में खर् परे होने विसर्गों को नित्य स् आदेश बताया है। परन्तु इस अपवाद सूत्र के द्वारा शर् अर्थात् श, ष, स्, परे होने पर विकल्प से विसर्ग आदेश बताया गया है। दूसरे पक्ष में सकार आदेश होगा। जैसे हरिः + शेते = हरिस् +शेते। स् को स्तोः श्चुना श्चुः से शकार आदेश होकर हरिश्शेते रूप बनेगा। विकल्प पक्ष में हरिः शेते रूप बनेगा।

ध्यान रहे क, ख् और प्, फ् परे होने पर कुप्वोः ᳵ क ᳶ पौ च से विसर्गों को विकल्प से जिह्वामूलीय और उपध्मानीय प्राप्त होते हैं और पक्ष में विसर्ग ही रहते हैं।

ससजुषो रुः 8.2.66

पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात्।

व्याख्याः पदान्त में आने वाले सकार और सजुष् के ष् को रु आदेश हो जाता है। जैसे शिव + स् (प्रथम एकवचन का प्रत्यय) = शिवस्। स् पद के अन्त में है अतः वर्तमान सूत्र से स् को रु प्राप्त हुआ। रु के उकार की इत्संज्ञा है अतः र् शेष रहा और स्थिति बनी शिवर्। खरवसानयोर्विसर्जनीयः से र् को विसर्ग हुआ क्योंकि र् अवसान में है। अतः रूप बना शिवः। इसी प्रका रामः, गुरुः, हरिः आदि।

अतो रोरप्लुतादप्लुते 6.1.113

अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेति। शिवो र्च्यः।

व्याख्याः अप्लुत अकार से परे पदान्त रु के स्थान पर उ आदेश हो जाता है, अप्लुत अकार परे होने पर। जैसे शिवस् + अर्च्यः। ससजुषो रुः से शिवस् के स् को रु आदेश हुआ। रु का र् शेष रहा। स्थिति हुई शिवर् + अर्च्यः। र् से पूर्व अप्लुत अकार है और परे भी अप्लुत अकार है। अतः वर्तमान सूत्र से र् को उ होकर स्थिति हुई– शिव उ अर्च्यः। अ और उ को गुण ओ हुआ और एङ पदान्तादति सूत्र से अ को पूर्वरूप हुआ और रूप बना शिवोर्च्यः।

हशि च 6.1.114

तथा। शिवो वन्द्यः।

व्याख्याः अप्लुत अकार से परे पदान्त रु हो और उससे परे हश् प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो रु को उ आदेश हो जाता है। जैसे शिवस् + वन्द्यः। यहाँ सःसजुषो रुः से पदान्त स् को रु आदेश हुआ। रु का र् शेष रहा। स्थिति हुई– शिवर् + वन्द्यः। रु से पूर्व अप्लुत अकार है और परे वकार है जो हश् प्रत्याहार का वर्ण है। अतः हशि च सूत्र से र को उ आदेश हुआ। तब स्थिति हुई शिव उ वन्द्यः। अकार और उकार की आद्गुणः से गुण सन्धि होकर रूप सिद्ध हुआ– शिवो वन्द्यः। हश् प्रत्याहार में सभी घोष वर्ण आते हैं।

भो भगो अधो अपूर्वस्य योशि 8.3.17

एतत् पूर्वस्य रोयदिशोशि। देवा इह, देवायिह। भोस् भगोस् अघोस् इति सान्ता निपाताः। तेषां रोर्यत्वे कृते-

व्याख्याः रु से पूर्व भो, भगो, अघो या अ पूर्व हो और परे अश् प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो रु को यकार आदेश हो जाता है। भोस्, भगोस् और अघोस् सकारान्त निपात हैं। उदाहरण भोस् देवाः। भोस् के स् को ससजुषो रुः से रु आदेश हुआ जिसका र् शेष रहा। स्थिति हुई भोर् देवा। यहाँ रु से पूर्व भो है ओर परे द् है जो अश् प्रत्याहार का वर्ण हे। अतः वर्तमान सूत्र से र् को य् आदेश हुआ। स्थिति हुई भोय् देवाः

हलि सर्वेषाम् 8.3.22

भो भगो अघो अपूर्वस्य यस्य लोपः स्याद्धलि। भो देवाः। भगो नमस्ते। अघो याहि।

व्याख्याः भो, भगो, अघो और अ पूर्वक य् का हल् परे होने पर सभी आचार्यों के मत में लोप हो जाता है। अतः भोय् देवाः = भो देवाः । इसी प्रकार भगो नमस्ते। अधो याहि। भोस्, भगोस् और अघोस् सम्बोधन शब्द हैं और निपात हैं। भोस् शब्द साधारण सम्बोधन में प्रयुक्त होता है। भगोस् शब्द आदर पूर्वक सम्बोधन में प्रयुक्त होता है और अघो शब्द में निन्दा का भाव निहित है। जैसे भो देवाः का अर्थ है अरे देवताओ। भगो नमस्ते का अर्थ है भगवान् आपको नमस्कार और अघो याहि का अर्थ अरे नीच, चला जा।

रोसुपि 8.2.69

अह्नो रेफादेशो न तु सुपि। अहरहः। अहर्गणः।

व्याख्याः अहन् शब्द के न् को रेफ आदेश हो जाता है, परन्तु सप्तमी बहुवचन के प्रत्यय सुप् के परे रहते रेफ आदेश नहीं होता है। जैसे अहन् अहन्। न् को रेफ आदेश होने पर स्थिति हुई अहर् अहर् = अहरहर्। खरवसानयोर्विसर्जनीयः से र् को विसर्ग होकर रूप बना अहरहः। इसी प्रकार अहन् + गणः = अहर् + गणः = अहर्गणः

रो रि 8.3.14

रेफस्य रेफे परे लोपः

व्याख्याः रेफ से परे रेफ हो तो पूर्व रेफ का लोप हो जाता है। जैसे पुनर् + रमते। यहाँ रेफ से परे रेफ है, इसलिए पूर्व रेफ का लोप होगा और स्थिति होगी पुन + रमते।

ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोणः 6.3.111

ढरेफयोर्लोपनिमित्रयोः पूर्वस्याणो दीर्घः। पुना रमते। हरी रम्यः। शम्भू राजते। अणः किम् - तढः, वढः। मनस् + रथः इत्यत्र रुत्वे कृते 'हशि च' इत्युत्वे 'रोरि इति लोपेच प्राप्ते।

व्याख्याः ढ् और र् का लोप जब ढ् और र् परे होने पर होता है, तो लोप होने के पश्चात् लोप निमित्रक ढ् और र् से पूर्व अण् (अ, इ,उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे पुन + रमते। यहाँ पुनर् के र् का लोप र् परे होने पर हुआ है। अतः रमते के र् से पूर्व जो अण् अर्थात् अकार है उसका दीर्घ हो जाएगा। अतः रूप बनेगा पुना रमते। इसी प्रकार हरिर् + रमते। यहाँ रोरि सूत्र से हरिर् के र् का लोप होकर स्थिति बनी हरि + रमते। रमते का रेफ लोप का निमित्त है, अर्थात् इसी र् के परे रहते हरिर् के र् का लोप हुआ है। लोप होने के पश्चात् रमते के रेफ से पूर्व जो इकार है वह अण् प्रत्याहार का वर्ण है। इसलिए इस इकार का ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घणः से दीर्घ होगा और रूप बनेगा हरी रमते। इसी प्रकार शम्भुर् + राजते = शम्भु + राजते = शम्भू राजते।

यह दीर्घ केवल अण् अर्थात् अ, इ, उ का ही होगा अन्य स्वर का नहीं, इसलिए सूत्र में अण् का प्रयोग हुआ है। अण् के अतिरिक्त कोई दूसरा स्वर होगा तो उसे दीर्घ नहीं होगा जैसे तढ् + ढः। यहाँ ढो ढे लोपः सूत्र से पूर्व ढकार का लोप हुआ और स्थिति हुई त+ढः अब क्योंकि ऋ अण् प्रत्याहार का वर्ण नहीं है, इसलिए इसे दीर्घ नहीं होगा और तढः रूप ही रहेगा।

विप्रतिषेधे परं कार्यम् 1.4.2

तुल्यबलविरोधे परं कार्य स्यात्। इति लोपे प्राप्ते 'पूर्वात्रसिद्धम्' इति रो रि इत्यस्यासिद्धत्वादुत्वमेव। मनोरथः।

व्याख्याः जब एक ही स्थान पर दो सूत्र समान रूप से लग रहे हों तो अष्टाध्यायी क्रम में जो सूत्र पर है अर्थात् बाद का है उसकी ही प्रवत्ति होगी। तुल्यबलविरोध का अर्थ है जब दो सूत्रों का समान बल हो और दोनों सूत्रों की प्रवत्ति समान रूप से हो। ऐसी अवस्था में यह देखना चाहिए कि अष्टाध्यायी में कौन सा सूत्र बाद का है। उसी की प्रवत्ति होगी। जैसे मनस् + रथः। यहाँ ससजुषो रुः से स् को र् हुआ और स्थिति हुई मनर् + रथः। यहाँ हशिच (6.1.114) सूत्र से र् को उ प्राप्त है और रो रि (8.3.14) से र् को लोप प्राप्त है। अष्टाध्यायी क्रम में रो रि सूत्र बाद का है, अतः र् का लोप प्राप्त है। परन्तु रो रि सूत्र त्रिपादी का है अतः पूर्वत्रासिद्धम् (8.3.1) से पूर्वसूत्र के प्रति असिद्ध है। अतः रो रि सूत्र से लोप प्राप्त होने पर भी हशि च सूत्र के प्रति असिद्ध है। अतः रो रि सूत्र से लोप प्राप्त होने पर भी हशि च सूत्र से र् को उ प्राप्त होगा। आद गुणः से गुण होकर रूप बनेगा। मनोरथः।

एतत्तदोः सुलोपोकोरना् समासे हलि 6.1.132

अककारयोरेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपो हलि, न तु ना् समासे। एष विष्णुः। स शम्भुः। अकोः किम्- एषको रुद्रः। अना् समासे किम् - अस् शिवः। हलि किम् - एषोत्र।

व्याख्याः ककार रहित एतद् और तद् से परे प्रथमा एकवचन के प्रत्यय सु का लोप हो जाता है जब हल् परे हो। जैसे एषस् + विष्णुः। यहाँ एतद् से परे सु प्रत्यय लगाकर एषस् शब्द बना है। (पूरी प्रक्रिया के लिए देखें सुबन्त प्रकरण)। इससे परे व् हल् है। अतः प्रकृत सूत्र से स् का लोप होगा और रूप बनेगा– एष विष्णु। इसी प्रकार तद् शब्द से स शम्भुः। रूप होगा। जब एतद् और तद् शब्द के साथ ककार हो तो सु का लोप नहीं होगा। एतद् और तद् का ककारयुक्त रूप अकच् प्रत्यय जोड़ने से बनता है। अकच् प्रत्यय टि से पूर्व जुड़ता है– अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः। अकच् प्रत्यय जुड़ कर एषकस् यह स्थिति बनती है। जैसे एषकस् रुद्रः अर्थात् यह रुद्र। यहाँ हल् परे होने पर स् का लोप नहीं होगा। ससजुषो से रुत्व और हशिच सूत्र से रु को उ होकर रूप तथा आद्गुणः से गुण होकर रूप बनेगा– एषको रुद्रः। ना् समास में भी सु का लोप नहीं होता है जैसे असः शिवः (उससे भिन्न शिव)। हल् परे होने पर ऐसा क्यों कहा? क्योंकि अच् परे होने पर सु का लोप नहीं होता है जैसे एषोत्र। यहाँ स् को ससजुषो रुः से रुत्व, अतो रोरप्लु तादल्पुते से र् को उत्व, आद्गुणः से गुण और एङः पदान्तादति से पूर्वरूप एकादेश होकर एषोत्र रूप बनता है।

सोचि लोपे चेत् पादपूरणम् 3.1.134

स इत्यस्य सोर्लोपः स्यादचि पादश्चेल्लोपे सत्येव पूर्येत। सेमामविड्ढि प्रभतिम्। सैष दाशरथी रामः।

व्याख्याः अच् परे होने पर सः के सु का लोप हो जाता हे यदि पाद की पूर्ति में इसकी आवश्यकता हो। पूर्व सूत्र द्वारा हल् परे होने पर ही सः के सु का लोप बताया गया है, अच् पर होने पर नहीं। परन्तु यदि पाद की पूर्ति के लिए आवश्यकता हो तो सः के सु का अच् परे होने पर भी लोप हो जाता है। जैसे– सेमामविड्ढि प्रभति य ईशिषे् यह वेद के जगती छन्द का उदाहरण है। जगती छन्द में 12 अक्षर होते हैं। यदि सः के सु का लोप करके सन्धि नहीं होती तो 12 अक्षर से अधिक हो जाते और पाद की पूर्ति नहीं होती। इसी प्रकार – सैषः दशरथी रामः यह अनुष्टुप् छन्द का लौकिक उदाहरण हैं अनुष्टुप् में आठ अक्षर होते हैं जो सः के सु का लोप करके और गुण सन्धि करके ही पूरा हो सकता है।

सः के सु का लोप न किया जाए तो सकार को रुत्व और भो भगो अधो अपूर्वस्य योशि से र् को यकार होगा और लोपः शाकल्यस्य से विकल्प से लोप होकर स एष रूप बनेगा। लोपः शाकल्यस्य के असिद्ध होने के कारण गुण सन्धि नहीं हो सकेगी। इस प्रकर स एष दशरथी रामः यह स्थिति होगी इसमें 9 अक्षर होने के कारण पाद की पूर्ति नहीं हो सकेगी।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. निम्नलिखित सूत्रों की व्याख्या कीजिए–

   विसर्जनीयस्य सः, स सजुषो रुः, अतो रोरप्लुतादप्लुते, हशि च, हलि सर्वेषाम्, रो रि, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोणः, विप्रतिषेधे परं कार्यम्, एतत्तंदोः सुलोपोकोरना् समासे हलि।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कार्य सूत्र निर्देश पूर्वक दिखाइए–

   विष्णुस्त्राता, हरिः शेते, शिवोर्च्यः, भो देवाः, अहर्गणः, अहरहः, पुना रमते, मनोरथः, एष विष्णु, सैष दाशरथी रामः।

(सन्धि प्रकरण समाप्त)